Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 18, Issue No. 5, August-2021, ISSN 2230-7540

कृष्ण काव्य एवं कृष्णभक्त कवियों का अध्ययन

Neha Rao*

PhD Scholar, Indian Language Centre, Jawaharlal Nehru University, New Delhi - 110067

सार – *इस अध्ययन में कृष्ण काव्य परंपरा पर विचार किया गया है। इस परंपरा में सूरदास का क्या स्थान है, इस पर भी प्रकाश डाला गया है। कृष्णकाव्य की परंपरा काफी प्राचीन है। इस परंपरा का विकास संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश आदि के काव्यों से होता हुआ हिंदी में आया है। हिंदी में सूरदास के अलावा अन्य कई कवियों ने कृष्ण का गुणगान किया है। इस परंपरा में अनेक महत्वपूर्ण कवियों में सूरदास का विशिष्ट स्थान है। इस पाठ में कृष्णकाव्य परंपरा के प्रतिनिधि कवि सूरदास का महत्व प्रतिपादित किया जाएगा। सूरदास भक्तिकाल के श्रेष्ठ कवि हैं। वे कृष्ण के उपासक हैं। इन्हें कृष्णभक्ति काव्य परंपरा का सर्वश्रेष्ठ कवि स्वीकार किया जाता है। सूर पुष्टिमार्गी थे। इनकी भक्ति प्रेमाभक्ति थी। प्रेमाभक्ति में समर्पण को ही सब कुछ माना गया है। भारतीय वांगमय में बहुत पहले से ही कृष्ण का उल्लेख मिलने लगता है। उनकी लीलाओं का भारतीय साहित्य में अनेक विधि वर्णन हुआ है।*

कुंजीशब्द – *कृष्ण, काव्य, परंपरा, कृष्णभक्ति*

----------X----------

प्रस्तावना

कृष्ण काव्य की परंपरा काफी प्राचीन है। विष्णु के अनेक अवतारों में श्रीकृष्ण को भी एक अवतार माना गया है। कृष्णावतार अद्भुत और विविधतापूर्ण है। इसीलिए उन्हें उस समय का अद्‌वितीय व्यक्ति घोषित किया गया है। श्री कृष्ण का उल्लेख हमें वैदिक साहित्य से ही मिलने लगता है। ऋग्वेद में श्रीकृष्ण का उल्लेख ऋषि या रचयिता के रूप में हुआ है। कौषीतकी ब्राह्मण में कृष्ण आंगिरस का उल्लेख है। छांदोग्योपनिषद में कृष्ण को आंगिरस का शिष्य बताया गया है। आंगिरस ने अपने शिष्य कृष्ण को जो उपदेश दिया है तथा श्रीमद्भागवत्गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को जो उपदेश दिया है, दोनों में पर्याप्त वैचारिक समानता मिलती है। छांदोग्य उपनिषद के कृष्ण देवकी पुत्र हैं। वैदिक साहित्य में कृष्ण का जो उल्लेख प्राप्त होता है, उसके आधार पर न तो हम उन्हें अवतार कह सकते हैं और न देवता। वे देवकी पुत्र थे और घोर आंगिरस के शिष्य थे। अपने गुरु (आंगिरस) से उन्होंने ब्रह्म विद्‌या की दीक्षा ली थी। वे एक मंत्रदृष्ट ऋषि के रूप में स्वीकार किए गए थे।

संस्कृत साहित्य

भागवत धर्म वैदिक परंपरा से पोषित शास्त्रीय धर्म के स्थान पर भागवत धर्म का उदय हुआ। भागवत् धर्म के अनेक नाम मिलते हैं, जैसे- पांचरात्र धर्म, एकांति धर्म, नारायण धर्म, वासुदेव धर्म, सात्वत धर्म आदि। इसी भागवत धर्म का विकसित रूप वैष्णव धर्म है। लक्ष्य करने की बात यह है कि महाभारत से पूर्व का साहित्य मानव कृष्ण की बात करता है और महाभारत तक आते-आते साहित्य में कृष्ण-अवतार स्वीकार कर लिया गया है। महाभारत में कृष्ण कथा के अनेक तत्व और सूत्र मिलते हैं। महाभारत के कृष्ण देवत्व की महिमा से मंडित हैं पर उनका मानवीय रूप ही अधिक मुखर है। इसी ग्रंथ में भीष्म पितामह ने उन्हें परब्रह्म कहा है। महाभारत में अनेक स्थलों पर अर्जुन और कृष्ण को नर और नारायण कहा गया है। यहाँ जिस कृष्ण की उपस्थिति है, वे ज्ञानी हैं, पांडवों के सखा, पथ-प्रदर्शक और सलाहकार हैं। महाभारत के कृष्ण का व्यक्तित्व एक वीर और नीतिज्ञ व्यक्ति का जीवनचरित है। इस काल में कृष्ण का लोकरक्षक रूप विकसित हुआ। महाभारत में ही कृष्ण के लिए एक और नाम श्गोविन्दश् व्यवहृत हुआ। इस ग्रंथ में श्री कृष्ण के जीवन की अनेक घटनाओं का विस्तृत वर्णन है, जैसे- कृष्ण जन्म, कंस और अन्य असुरों का वध, द्‌वारकागमन, देवकी-वासुदेव का उद्धार, कौरव-पांडव युद्ध के मैदान में अर्जुन को उपदेश आदि।

कृष्ण काव्यों में कृष्ण के एक और रूप 'गोपाल की विस्तृत चर्चा मिलती है। कृष्ण के इस रूप की सर्वाधिक अभिव्यक्ति हरिवंशपुराण में हुई है। इसी पुराण में कृष्ण ने इंद्रपूजा का विरोध किया था और गोवर्धन पूजा की सलाह दी थी। इसी ग्रंथ में उन्होंने गायों को अपना सर्वस्व कहा है। कृष्ण चरित्र की

www.ignited.in

व्याख्या करने वाला दूसरा पुराण श्ब्रह्मवैवर्त पुराणश् है। इस पुराण में कृष्ण जन्म का कारण, अंशावतारों का वर्णन कृष्ण और राधा के संबंधों की चर्चा, बलदेव का जन्म, नंद के यहाँ पुत्रोत्सव आदि का विस्तृत वर्णन है। वायु पुराण, विष्णु पुराण और शिवपुराण में भी कृष्ण का उल्लेख मिलता है।

भागवत पुराण

कृष्ण चरित्र का विस्तृत वर्णन भागवत पुराण में हुआ है। इस पुराण में कृष्ण के असुर संहारक रूप, बाल लीला, रासलीला, राजनीतिवेत्ता, कूटनीतिज्ञ, योगेश्वर और परमब्रह्म स्वरूप की विस्तृत विवेचना हुई है। भागवत के दशम स्कंध के पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध में कृष्ण कथा का विस्तृत वर्णन है। इस स्कंध में कृष्ण के नाना संस्कारों, अनेक राक्षसों का वध, यमलार्जुन उद्धार, गोचारण, कालियदमन, वंशीवादन, चीरहरण, पनघट लीला, गोवर्धन लीला, नंद-हरण, रासलीला, दान लीला, शंखचूड़ दैत्यवध, अरिष्ट वध, अक्रूर ब्रज आगमन, कुब्जा कथा, धनुभंग, कुवलया वध, मुष्टि और चाणूर वध, यज्ञोपवीत वर्णन, उद्धव-ब्रजआगमन, उद्धव-गोपी संवाद, भ्रमरगीत, सुदामा-कृष्ण कथा, कुरुक्षेत्र में कृष्ण का आगमन, गोपी राधा-यशोदा आदि के संवाद और कुरुक्षेत्र यज्ञ आदि का विस्तृत वर्णन मिलता है। यहाँ यह तथ्य विशेष रूप से ध्यातव्य है कि हरिवंश पुराण में राधा-कृष्ण की शृंगारलीला का उल्लेख भी नहीं है। यह ग्रंथ मध्यकालीन कृष्ण भक्ति साहित्य का मुख्य उपजीव्य है।

लौकिक संस्कृत साहित्य

लौकिक संस्कृत साहित्य पर वैदिक और पौराणिक साहित्यिक प्रवृत्तियों का पूर्ण प्रभाव है। कृष्ण भक्ति संबंधी अनेक पुराणेतर ग्रंथों के अवलोकन से यह स्पष्ट हो जाता है कि ये ग्रंथ महाभारत और पुराण के कथानक पर आधारित हैं। लौकिक संस्कृत साहित्य में श्री कृष्ण का उल्लेख आरंभिक व्याकरण ग्रंथों, चंपू काव्यों और नाटकों से ही मिलने लगता है। पाणिनि के अष्टाध्यायी में वासुदेव का उल्लेख है तो पतंजलि ने अर्जुन और वासुदेव दोनों का उल्लेख किया है। पतंजलि के यहाँ तो कंस-वध का वर्णन भी मिलता है। प्रसिद्ध नाटक कवि भास ने व्यायोग, दूतवाक्य और बालचरित्र में श्री कृष्ण के चरित्र का उल्लेख किया है। अश्वघोष के श्बुद्धचरित्र में श्रीकृष्ण की लीला माधुरी का उल्लेख है। कालिदास के मेघदूत और कुमार संभव में भी श्रीकृष्ण का उल्लेख मिल जाता है। माघ के शिशुपाल वध में श्रीकृष्ण की चर्चा हुई है। क्षेमेन्द्र के दशावतार चरित्र में तो श्री कृष्ण का विस्तृत वर्णन मिलता है। इस रचना में श्रीकृष्ण के पराक्रमी, वत्सल, दुष्ट-संहारक आदि रूपों पर पर्याप्त मात्रा में लिखा गया है। संस्कृत साहित्य की उक्त रचनाओं में श्री कृष्ण के ब्रह्म स्वरूप की अद्भुत झाँकियों हैं। बाद की रचनाओं में कृष्ण के ब्रहमत्व के साथ उनके माधुर्य रूप का विकास हुआ। श्श्रीकृष्ण कर्णामृत स्त्रोतम परवर्ती संस्कृत साहित्य की महत्वपूर्ण रचना है। इसके रचयिता का नाम लीला शुक्र है। इस रचना में भक्ति भावना से परिपूर्ण श्री कृष्ण के प्रति समर्पण का भाव निदर्शित है।

गीत गोविंद

'गीत गोविंद' की रचना जयदेव ने की है। जयदेव की इस रचना को कृष्ण काव्य का नया प्रस्थान कहा गया है। दरअसल कृष्ण काव्य परंपरा में महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले भागवत में राधा का उल्लेख नहीं है, साथ ही साथ पूरी रचना में भागवतकार की आध्यात्मिक दृष्टि सक्रिय है। यहाँ उन्हें बार-बार भगवान कहा गया है और उनकी अलौकिक लीलाओं का वर्णन किया गया है। जयदेव का गीत गोविंद भक्ति और श्रृंगार से समन्वित रचना है। इनके कृष्ण-राधा तथा गोपियों से स्नेहभाव रखते हुए भी परमदेव के मूर्तिमान स्वरूप हैं।

गीत गोविंद छोटे-छोटे बारह सगों में विभाजित रचना है और इसमें तीन मुख्य पात्र हैं- कृष्ण, राधा और उनकी सखी। ग्रंथ के प्रारंभ में मंगलाचरण और दशावतारों का वर्णन है, इसके बाद राधा और कृष्ण के मिलन चित्र अंकित किए गए हैं। जयदेव के रास वर्णन में श्रृंगार का उन्मुक्त वर्णन है। 'गीत गोविंद' की विशेषता है कि इसमें राधा और कृष्ण धीरे-धीरे सहज मानवीय भावभूमि पर लाए गए हैं। यहाँ राधा-कृष्ण का चरित्र गीतिकाव्य के माध्यम से कोमलकांत पदावली में व्यक्त हुआ है। यह एक ऐसी रचना है जो आगे आने वाली पदावली का मुख्य स्रोत है। राधा-कृष्ण के चरित को मानवीय स्वरूप प्रदान कर जयदेव ने कृष्ण काव्य को जो नया उन्मेष दिया है, असंदिग्ध रूप से विशेष महत्वपूर्ण है।

जातक कथाएँ

पालि में रचित जातक कथाओं में भी कहीं-कहीं कृष्ण का उल्लेख मिल जाता है। इन कथाओं में कहीं-कहीं तो कृष्ण का उल्लेख विष्णु के अनेक रूपों के वर्णन के समय हुआ है तो कहीं-कहीं स्वतंत्र रूप से भी। कन्हदीपायन (कृष्ण द्वैपायन) जातक, सोननंद जातक, तेसकुण जातक और घट जातक में कृष्ण की अनेक लीलाओं का वर्णन है। प्राकृत साहित्य की गाथा सतसई (गाथा सप्तशती) और हरिवंश चरित में कृष्ण कथा का समुचित विवेचन है, भोजराज के सरस्वती कंठाभरण में संदर छंदों के माध्यम से राधा-कृष्ण, यशोदा, रुक्मिणी से संबंधित कथाओं को लौकिकता के आधार पर निरूपित किया गया है। हरि भद्रसूरि के 'नेमिणाह चरिउ' में श्रीकृष्ण के देवत्व रूप का

www.ignited.in

वर्णन हुआ है। प्राकृत पैंगलम् में भी श्रीकृष्ण का उल्लेख मिलता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. कृष्ण काव्य की परंपरा का अध्ययन
2. भक्तिकालीन कृष्णभक्त कवियों का अध्ययन

साहित्य की समीक्षा

शिवसिंह सरोज (2012) कवि की लेखनी मे बडी करामात होती है, वह अपनी कल्पना शक्ति के द्वारा शब्दो की मजु-मूर्ति निर्माण कर, उसमे सजीवता का सचार कर देता है। फिर वह प्राण-प्रतिष्ठित प्रतिमा ऐसी सुन्दर, सुहावनी और भावयुक्त बन जाती है, कि सहृदय समाज का हृदय अनायास ही उसकी ओर आकृष्ट हो जाता है। किसी महत्वपूर्ण घटना को जीवित रखने के लिए कविता-कला का आश्रय मिल जाना बड़े गौरव की बात है। यदि आदि कवि वाल्मीकिजी और गोस्वामी तुलसीदासजी ने अपनी कविता कल्लोलिनी द्वारा राम रस न बहाया होता, तो आज मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् रामचन्द्र का आदर्श चरित्र ससार के सामने न होता। यही बात अन्य वश्यवाक् कवियो के सम्बन्ध मे भी कही जा सकती है। सच तो यह है, कि कवि अपनी मौलिक रचना द्वारा स्वय जीवित रहता है और अपने चरित नायक तथा तत्सम्बन्धी अन्य अनेक व्यक्तियो को अमर बना देता है।

रामधारी सिंह दिनकर (2013) आलोच्य कवियो ने बाल सहपाठी सुदामा के प्रति श्रीकृष्ण के मैत्री निर्वाह के आदर्श रूप का वर्णन बडी रूचि से किया हैं हलधरदास, नन्ददास, जेठमल, अमृतराय, वीर वाजपेयी, गोपाल, आलम, वशमणि, मुरलीधर श्रीवास्तव, प० नारायण प्रसाद, बिहारीदास आदि ने तो इस प्रसग को लेकर स्वतत्र खण्ड काव्य ही लिख डाले है, शेष प्राय सभी कृष्ण भक्त कवियो ने अपने-अपने काव्यो के अनुरूप विस्तार या सक्षेप मे सुदामा की कथा लिखी है। सभी काव्यो के सुदामा प्रसगो का सांगोपाग अध्ययन तो एक स्वतत्र प्रबन्ध का विषय है, अतएव यहाँ कृष्ण और सुदामा के मैत्री भाव पर प्रकाश डाला जायेगा।

डॉ, विजय पाल सिंह (2014) श्रीमद्भागवत मे सुदामा की पत्नी का नाम श्सुशीलाश् है, पर हिन्दी की हस्तलिखित प्रतियो मे 'सुबुद्धि' नाम दिया गया है। यदि यह भक्ति ग्रन्थ होता तो यह फेरफार न किया गया होता। कवि यहाँ दिखाना चाहता है कि बुद्धि का सदुपयोग सुदामा की पत्नी के चरित्र की विशेषता है, शील की विशेषता दिखाना उनका लक्ष्य नही है। यदि पत्नी प्रेरित न करती तो उनका दारिर्द्य दूर न होता। यदि (मत्री, प्रधानमत्री, राज्यपाल या राष्ट्रपति जो भी आधुनिक दृष्टि से नाम देना चाहे श्रीकृष्ण को दे लीजिए) ऐसे श्रीकृष्ण के पास वे न जाते तो जीवन भर दारिद्रय ही भोगते रह जाते। बस, अतर यही है कि श्रीकष्ण दिव्य पुरुष थे और भाव सपदा उनके पास पूर्ण थी, इसलिए सुदामा जी के पैरो को धोने का कार्य उन्होने स्वय किया, सेवको को नही सौपा। सुदामा द्वारा किसी स्वार्थ की सिद्धि वे नही चाहते थे। निर्वाचन विषयक प्रसार उनका लक्ष्य नही था। निस्वार्थ भाव से उन्होने सुदामा का जीवन परिवर्तित किया था। सुदामा भी कोई बडा स्वार्थ लेकर नही गये थे। जीवन-यापन की सुविधा ही वे चाहते थे। प्रकृतिस्थ तो उनमे निस्पृहा ही थी। अत स्वार्थ के आश्रय एक प्रकार से दोनो नही थे।

अनुसंधान क्रियाविधि

द्वितीयक स्रोत

माध्यमिक डेटा कई संसाधनों से एकत्र किया जाता है जैसे विभिन्न पुस्तकालयों, पुस्तकों, शोध पत्रिकाओं, इंटरनेट, पत्रिका, और समाचार पत्रों में साहित्यिक कॉलम, आधिकारिक वेबसाइट

डेटा विश्लेषण

प्रमुख भक्तिकालीन कृष्णभक्त कवि

बल्लभाचार्य और उनके पुत्र विट्ठलनाथ ने अद्वैत शद्धाद्वैत दर्शन और भक्ति मार्ग पर अनेक ग्रंथों की रचना की। इसी संप्रदाय में सूरदास, परमानंददास, कुंभनदास, कृष्णदास, नंददास, चतुर्भुजदास, छीत स्वामी और गोविंद स्वामी दीक्षित हुए थे। इन्हीं आठों भक्त कवियों को 'अष्टछाप' के नाम से जाना जाता है। इन कवियों ने श्रीकृष्ण के चरित को रागानुगा भक्ति भावना से शान्त, दास्य, वात्सल्य, सख्य और माधुर्य नामक पाँच रूपों में अभिव्यक्त किया है। भक्ति के इन्हीं रूपों को पंचभावोपासना कहते हैं। अष्टछाप के इन कवियों में सूरदास, परमानंददास तथा नंददास का नाम सबसे प्रमुख है। इन कवियों के अतिरिक्त भक्तिकाल में और भी महत्वपूर्ण कृष्णभक्त कवियों ने कृष्ण के विविध रूपों को लेकर काव्य रचना की। यहाँ हम इन्हीं विशिष्ट कवियों का संक्षिप्त परिचय दे रहे हैं।

सूरदास

विद्यापति के बाद सूरदास को ब्रज भाषा का प्रथम कृष्ण कवि माना गया है। सूरदास की 'सूरसागर', 'सूरसारावली और साहित्यलहरी नामक तीन रचनाएँ हैं। सर साहित्य के कुछ

अध्येता 'साहित्यलहरी को सूरदास की रचना नहीं मानते। सूरदास ने अपनी रचनाओं में कृष्ण-जन्म, उनकी बाल क्रीड़ाओं, गोचारण, राधा और गोपियों के साथ प्रेमक्रीड़ा, अनेक असुरों को वध, गोवर्धन धारण, मथुरा-गमन, कंस वध, द्वारिका गमन और कुरुक्षेत्र में राधा ओर गोप-गोपियों से पुनर्मिलन का प्रभावी चित्रण किया है। सूरदास के कृष्ण पूर्णब्रह्म हैं। उनकी भक्ति सख्य भाव की है। उनके साहित्य में विनय और दास्य भाव के पद कम हैं, किंतु कृष्ण काव्य में इन पदों का विशेष महत्व है। उनके भगवान भक्तों की पुकार पर दौड़ पड़ते हैं। सूरदास के कृष्ण की घोषणा है

हम भक्तन के भक्त हमारे।

भक्तै काज लाज हिय धरिकै पाय पयोद धाऊँ।

जहँ-जहँ पीर पडै भक्तन पै तहँ-तहँ जाय छुड़ाऊँ।

सूरदास का प्रमुख ग्रंथ 'सूरसागर' है। इस ग्रंथ में वात्सल्य, शृंगार और भक्ति की त्रिवेणी प्रवाहित हुई है।

सूर ने श्रीकृष्ण को परब्रह्म माना है। उनके अनुसार संपूर्ण ब्रह्मांड में श्रीकृष्ण ही व्याप्त हैं, कोई दूसरा नहीं। ब्रह्म के इसी रूप का चित्रण करते हुए सूरदास ने लिखा है

सकल तत्व ब्रह्मांड देव पुनि, माया सब विधि काल।

प्रकृति पुरुष श्रीपति नारायन, सब है अंश गुपाल।।

यही ब्रह्म भक्तों को आनंद प्रदान करने के लिए अवतार लेते हैं। भगवान श्रीकृष्ण ने भक्तों को आनंद प्रदान करने के उद्देश्य से ही अपनी समस्त शक्तियों सहित वृंदावन में अवतार लिया है। सूरदास ने श्रीकृष्ण की लीला तथा विस्तार के संबंध में लिखा है -

खेलत-खेलत चित्त में आई सृष्टि करन विस्तार।

अपने आप हरि प्रगट कियो हैं हरि पुरुष अवतार ।।

सूरदास पूर्णतया पुष्टिमार्ग के अनुयायी थे। ब्रह्म की कृपा प्राप्ति के पश्चात ही जीव सर्व समर्थ होता है। वह कुछ भी कर सकने में सक्षम हो जाता है। सूरदास कहते हैं

चरन कमल वंदी हरिराई।

जाकी कृपा पंग गिरि लं, अंधे को सब कुछ दरसाई।

बहिरौ सुनै, गूंग पुनि बोले, रंक चलै सिर छत्र धराई।

सूरदास स्वामी करुणामय, बार-बार बंदौ तिहि पाँई।

भक्ति नौ प्रकार की मानी जाती है: श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद सेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य और आत्म-निवेदन। इसे 'नवधा भक्ति' कहते हैं। बल्लभाचार्य ने नवधाभक्ति में प्रेम लक्षणा भक्ति जोड़कर श्दशधा भक्ति का विधान बनाया। सूरदास 'दशधा भक्ति' का पूर्णतया पालन करते हैं

श्रवण कीर्तन स्मरण-पाद रत अरचन वंदन दास।

सख्य और आत्मनिवेदन प्रेमलक्षणा जास।।

परमानंद दास

कृष्ण काव्य परंपरा में सूरदास के पश्चात परमानंददास को विशेष महत्व प्राप्त है। परमानंददास का जन्म कन्नौज के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उन्हें श्री बल्लभाचार्य से दीक्षा मिली थी। उनके विषय में नाभादास के भक्तमाल' में निम्नलिखित छप्पय मिलता है।

ब्रजवधू रीति कलयुग विषै परमानन्द भयो प्रेमकेत

पंगंउ बाल कैसोर गोपलीला सब गाई

अचरज कहा यह बात हतौ पहिलौ जु सखाई

नैननि नीर प्रवाह रहत रोमांच रैन दिन

गदगद गिरा उदार श्याम शोभा भी ज्यौ तन

सारंग छाप ताकी भई श्रवण सुनत आबेस देत

ब्रजबधू रीति कालजुग विषै परमानंद भयो प्रेमकेत।

परमानंददास की मुख्य रचना 'परमानंदसागर' है। 'दानलीला', 'उद्धवलीला', 'ध्रुवचरित्र', 'दधिलीला' आदि उनके अन्य ग्रंथों का भी उल्लेख मिलता है पर 'परमानंदसागर' ही उनकी मुख्य कृति है इस कृति में 930 पद संकलित हैं। मंगलाचरण, श्री जन्माष्टमी, नन्द महोत्सव, माखनचोरी, गोचारण, राधा, मुरली, रास, अभिसार, मथुरा प्रसंग आदि इस ग्रंथ के मुख्य विषय हैं। परमानंददास की रचनाओं के कथ्य के संदर्भ में डॉ. हरवंशलाल शर्मा ने लिखा है- 'कृष्ण की संपूर्ण लीलाओं की कथा कहना परमानंददास का उद्देश्य नहीं प्रतीत होता, यद्यपि उनके जीवन के महत्वपूर्ण प्रसंगों का संकेत यहाँ प्राप्त हो जाता है।

परमानंदसागर से ज्ञात होता है कि बालक कृष्ण के जन्म से लेकर माखनलीला आदि तक डेढ़ सौ पद रचे गये हैं। मुरली तथा राधा की चर्चा भी किंचित विस्तार से है और कृष्ण के

www.ignited.in

रसिकेश्वर रूप को प्रमुखता मिली है, जिसमें राधा की आसक्ति, मानापनोदन, अभिसार का विस्तृत वर्णन है। भ्रमर गीत परंपरा कृष्णकाव्य का मुख्य कथावस्तु है और परमानंदसागर में भी इससे संबद्ध पद मिलते हैं। परिशिष्ट के रूप में नित्य सेवा, कीर्तन तथा शरणागति आदि की भावनाएँ व्यंजित हैं।

"रूप सूरसागर और परमानंददास के कुछ पर्दों में अदभुत समानता मिलती है। बालकृष्ण के चित्रण में दोनों कवियों को विशेष स्थान दिया जाता है। सूरदास का एक पद है

कहन लगे मोहन मैया-मैया।

इस पद से मिलता-जुलता परमानंददास का पद पढ़िए

कहन लगे मोहन मैया-मैया।

बाबा-बाबा नन्दराय सों और हल धर सों भैया भैया।

छगन-मगन मधुसूदन माधौ सब ब्रज लेत बलैया।

इन दोनों पदों में पहली पंक्ति समान है। अन्य पंक्तियों में भाव-साम्य है। परमानंददास के यहाँ ऐसे अनेक पद मिलते हैं। सूरदास के यहाँ कृष्ण और राधा का प्रथम साक्षात्कार ब्रज की गलियों में खेलने के क्रम में होता है। परमानंददास के यहाँ राधा और कृष्ण के मिलन का आरंभ इस तरह से हुआ है

गोरस राधिका लै निकरी

नंद को लाल अमोलो गाहक ब्रज से निकसत पकरी।

'परमानंदसागर' में राधा और कृष्ण के मिलन-चित्रों की भरमार है। कभी वे ब्रज की गलियों में मिलते हैं तो कभी कुंज-कछारन में। दोनों एक दूसरे के बिना नहीं रह सकते

राधा माधौ बिनु क्यों न रहै

एक स्यामसुंदर के कारन और सबनि की निंदन सहै।

गोपियों की प्रेमानुभूति, रासलीला, अभिसार आदि का वर्णन भी कवि ने पूरी तन्मयता से किया है। परमानंद सागर में भ्रमरगीत प्रसंग संक्षिप्त है। इनकी गोपियाँ सूर की गोपियों की तरह साकार और निराकार के द्वंद्व में नहीं उलझी हैं। वे अपनी वियोग दशा में ही डूबती उतराती हैं। अन्य चीजों की उन्हें सुध ही नहीं है। उद्धव से अपनी व्यथा-कथा कहने में भी वे असमर्थ हैं

ऊधौ नाहिन परत कही

जब ते हरि मधुपुरी सिधारे बौहोतहि बिधा सही।

वे कृष्ण की पाती भी नहीं बाँच पाती

पतियाँ बांचेहू न आवे

देखत अंक नैन जल पूरे गदगद प्रेम जनावै।

कृष्ण के वियोग में ब्रज की जिस करुणदशा का चित्रण सूरदास ने किया है उसे परमानंद दास के यहाँ भी देखा जा सकता है

ब्रज के विरही लोग विचारे

बिन गोपाल ठगे से ठाढ़े अति दुर्बल तन हारे

मात जसोदा पंथ निहारत निरखत सांझ सकारे

जो कोउ कान्ह कान्ह कहि बोलत अंखियन बहत पनारे

यह मथुरा काजर की रेखा जो निकसे सो कारे

परमानंद स्वामी बिनु ऐसे जैसे चंदा बिनु तारे।।

निष्कर्ष

कृष्ण काव्य परंपरा के अनुशीलन से यह ज्ञात होता है कि कृष्ण कथा तीन स्थलों गोकुल, मथुरा और द्वारिका से जुड़ी हुई हैं। गोकुल, जहाँ कृष्ण का बचपन बीता था। जहाँ उनकी बाल लीला और किशोर लीला संपन्न हुई थीं उनकी इन रसमयी लीलाओं पर माता-पिता, गोप-गोपी आदि मुग्ध हुए थे। इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि मथुरा और द्वारिका में रहने वाले कृष्ण वही नहीं हैं जो गोकुल में थे। मथुरा और द्वारिका में कृष्ण के ऐश्वर्यमयी रूप में निखार आया है। कृष्ण की गोकुल लीला इन दोनों स्थलों की लीला से भिन्न है। कृष्ण काव्य परंपरा में मथुरा और द्वारिका को केंद्र में रखकार काफी कुछ लिखा गया है। सूरदास इसके अपवाद हैं। यद्यपि सूरसागर में उक्त तीनों स्थलों की कृष्ण लीला का वर्णन है पर प्रधानता गोकुल की लीला का है। सूरदास के काव्य में मुख्य रूप से कृष्ण की गोकुल लीला का वर्णन हुआ है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लक्ष्य किया था कि "वात्सल्य और श्रृंगार के क्षेत्र में तो इस महाकवि ने मानो औरों के लिए कुछ छोड़ा ही नहीं।" ध्यातव्य है कि उक्त दोनों क्षेत्रों का संबंध कृष्ण की गोकुल लीला से ही है।

कृष्ण काव्य परंपरा पर बात करते हुए हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि कृष्ण कथा की लिखित परंपरा तो है ही, लोकजीवन में भी इस कथा की गहरी पैठ है। आज भी हमें ऐसे लोग मिल जाएँगे जिन्हें कृष्ण कथा की लिखित परंपरा का बोध नहीं है पर

www.ignited.in

लोक जीवन में रचे-बसे कृष्ण की अद्भुत लीलाओं से वे भलीभाँति परिचित हैं। सूरदास ने कृष्ण कथा के लिए दोनों परंपराओं- शास्त्रीय और लोक से आधार ग्रहण किया है। लोक से आधार ग्रहण करने के कारण ही उनके पदों में लोकगीतों का उत्सवधर्मी संगीत मिलता है। केवल इतना ही नहीं, सूरदास ने अपनी कारयित्री प्रतिभा से कृष्ण काव्य परंपरा में काफी कुछ नया भी जोड़ा है। सूरदास ने राधा और कृष्ण के प्रेम के सहज विकास में अनेक नवीन प्रसंगों की उद्भावना की है। कृष्ण और राधा का बाल सखा-सखी रूप सूर की मौलिक उद्भावना है। निःसंदेह कृष्ण काव्य परंपरा में सूरदास की गणना सर्वश्रेष्ठ कवि के रूप में पूरी तरह तर्कसंगत है।

सूरदास के साहित्य में भक्ति के सभी भावों का वर्णन मिल जाता है पर सख्य, वात्सल्य और माधुर्य भाव की भक्ति पर उन्होंने विशेष जोर दिया है। वे श्रीकृष्ण को सखा मानते हैं। उनके बालरूप को सर्वाधिक महत्व प्रदान करते हैं और गोपियों के माध्यम से माधुर्यभाव की भक्ति प्रवाहित करते हैं। सूर के काव्य में राधा स्वकीया हैं और गोपियाँ परकीया। गोपियों का प्रेम अत्यधिक तीव्र और मर्यादाओं का उल्लंघन करने वाला है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वैदिक साहित्य के कृष्ण काव्यों की विशेषताएँ बताइए।
2. कृष्ण काव्यधारा में कवि जयदेव के गीतगोविंद का महत्व बताइए।
3. सूर के विरह वर्णन की विशेषताएँ बताइए।
4. भक्त कवि के रूप में सूरदास का मूल्यांकन कीजिए।
5. सूरदास के भ्रमरगीत का प्रतिपाद्य लिखिए।
6. कृष्ण काव्य परंपरा में मीरा का महत्व रेखांकित कीजिए।
7. कृष्ण काव्य परंपरा में आधुनिक काल के कवियों का स्थान निर्धारित कीजिए।
8. हिंदी साहित्य के विकास में कृष्ण काव्य धारा के योगदान की चर्चा कीजिए।
9. हिन्दी साहित्य की भूमिका- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।
10. हिन्दी साहित्य और सवेदना का विकास- डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
11. हिन्दी साहित्य का इतिहास- स0 डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिग हाउस, नई दिल्ली।

Corresponding Author

Neha Rao*

PhD Scholar, Indian Language Centre, Jawaharlal Nehru University, New Delhi - 110067

www.ignited.in